शब्दों में पत्थर

राजी सेठ

शब्दों में पत्थर

कविता संग्रह

राजी सेठ

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2024

© राजी सेठ

उनवान

धनुष- टंकार हैं ये कविताएँ

पत्थर की लकीर, मील का पत्थर, काला पत्थर, सफेद पत्थर, लाल पत्थर आदि.आदि ये पत्थर क्या कहते हैं! इन सबकी प्रतीकात्मकता इन्हें अर्थवान बनाती है। ये सबके लिए प्रतीकार्थ प्रस्तुत करते हैं। और जब ये पत्थर शब्दों के पर्याय स्वरूप में आते हैं तो इनसे बिम्बार्थ की व्यंजना व्यंजित होती है। प्रतीक से बिम्ब के स्वरूप में ढल जाना शब्दों में पत्थर की गूँज है। शब्दों का यह गुँजायमान ही अर्थों की छटाएँ बिखेरता है, तब जाकर शब्द 'पत्थर की लकीर' बन जाते हैं- अटूट, अडिग, भरोसेमंद! लक्षण.विन्यस्त! परिप्रेक्ष्य शब्दों में पत्थर का प्रतिकार्थ स्पष्ट होता है।

कथा-साहित्य में राजी सेठ की सृजन- प्रतिष्ठा प्रतिष्ठित है। वही काव्यभाषा आपकी कविताओं को अर्थवान बनाती है। पत्थर अडिग वृत्ति का द्योतक है। राजी सेठ इस वृत्ति की व्यावहारिकी हैं, इनकी कविताएँ भी इसका संवरण करती हैं। 'शब्दों में पत्थर' इसी वृत्ति का सटिक संवरण है-

पलट नहीं पायेंगे

शब्दों में

निहित नम्यता की तरह!

क्योंकि शब्दों में पत्थर का काया- प्रवेश नम्यता के लिए नहीं होता। सच होता है, कठोर होता है, मूल्य की मर्यादा देता है। यानि कि वृत्ति- प्रवृत्ति, काल- समकाल की परिधि में धनुष- टंकार हैं ये कविताएँ!

'पवित्रता के लिए साहस' यह परम सत्य है। पवित्रता पराक्रम के साहस से आती है। विपरीत इसके पराक्रम निकृष्ट हो जाता है। कवयित्री राजी सेठ इस हक के लिए अडिग हैं

पवित्रता को कोई कैसे देख सकता है?

तो फिर प्रेम को भी कोई कैसे देख सकता है?

जिसने भी आकाश के बीच 'अवकाश' को देख लिया, वही निरभ्र उज्ज्वलता देख सकता है, पवित्रता देख सकता है। पवित्रता के लिए एक.सा.पन व भरपूर खालीपन दोनों का समरस समन्वय आवश्यक ही नहीं परम है। आकाश, पहाड़, पेड़, सदी आपकी कविताओं के प्रतीकार्थ हैं; जीवन बोध के लिए! प्रकाश स्तम्भों के नीचे बैठकर जो गाथाएँ लिखी गई हैं उसमें वही आत्मबोध है जीवन-बोध के हेतु! स्त्री-विमर्श की सार्थक तस्वीर उकेरती कविताएँ परम्परा के मध्य पारिवारिक शुचिता का सेतु निर्मित करती हैं जिसमें बंधन है, सुख है, सृजन है और है शाश्वत संसार!

कथात्मक आयाम में समेटती लम्बी कविताओं का शिल्प आंतरिक बाध्यता व आत्मगत संघर्ष का बाहरी परिदृश्य जो दीर्घकालिक अनुभूत-व्यथा का काव्यारोपण होता है। आकार की दृष्टि से नहीं बल्कि गहरे-घने चिंतना की परिणति होती है लम्बी कविता। प्रस्तुत संग्रह में संग्रहीत कुछ लम्बी कविताओं में 'ताजमहल और रामकली',

‘तुमने क्यों पूछा’, ‘एक म्यान में’, ‘लिखना तो तुम्हें था’, ‘कलंक नहीं ढोयेगी सीता’ अपनी आर्थी व्यंजना में सम्पुष्ट हैं, शब्दों में पत्थर की तरह....

- डॉ. डी. एन. प्रसाद

वर्धा

जो

सृजन का स्रोत है

उस आत्मीय को!

क्षणों का एक जमाव समय की छाती से खिसककर ऐसे इतिहास रच देता है जिसकी निरन्तरता सम्पूर्ण है, जिसमें अखण्ड कुछ नहीं। जो कुछ है अखंडित एकाग्र-बोध है। एकाग्र-बोध की एकान्तिक-यात्रा एकान्त नहीं होती, अवचेतन में समग्रता का चेतन-चित पल्लवित होता रहता है। सृजन के पल-छिन में एकाग्रता केन्द्रित होकर समग्रता का आह्वान करती है, काव्य का रसोद्रेक यहीं साधारणीकृत सौन्दर्य में लोक-व्यापी बन जाता है। काव्य का प्रयोजन इसी में सिद्ध होता है।

-राजी सेठ

अनुक्रम

प्रकाश- स्तम्भों के नीचे	13
मैं वहाँ नहीं	14
बस्ते ही बचाते हैं	16
महानगर-1	17
इतना कहाँ थके थे	19
पहाड़ पर बंगला	20
सरहद	23
समय	24
यह कौन-सा राजकुल है!	25
स्मृति	28
आकाश और खिड़की	29
आत्म- साक्षात्कार	30
दुःख उनको भी थे	31
खाद	32
कैसे उगाया गया वृक्ष	34
कितना कुछ है	35
आतंक-1	38

सदी का अंत 39

कौन- सी आत्मा 42

देश के स्तर पर 43

पवित्रता के लिए साहस 44

कलंक नहीं ढोयेगी सीता 46

आकाश ने कहा 56

क्यों डरे तुम पिता 58

दृष्टि की आरी 60

अनवरत 61

बस उतना 62

औसत 63

हथेली भर जगह 64

अग्रगामी 65

सह जन्माओं से 67

आत्मबोध 68

जन्म-दिन 69

उन बच्चों को 71

बोना चाहा स्थायित्व 72

चुप्पियाँ 75

उचाट 78

ताजमहल और रामकली 81

पहाड़ देखते हुए 87

अभिशाप 88

...और तुम कहते हो- 90

हर रात 92

टूट पड़ता दिन 93

नयी पीढ़ी 94

प्रजा-राजा 95

पानी की गाँठ 97

कहाँ से शुरू करूँ 98

सदा-सदा का अभीष्ट 99

मैदान विस्फारित था 100

क्या पता दीख ही जाये 101

घर 104

दर्द की तरह 105

असमंजस 106

तुमने क्यों पूछा 108

कैदी की पत्नी 126

प्रवास से पुकार 130

महानगर-II 131

मरणासन्न बहिन से 132

एक म्यान में 135

घरों से कहा था 143

शब्दों में पत्थर 145

नाम 146

कैसे 147

एक द्वन्द्व है 148

आत्मकथा 150

मुक्ति मेरी हो 153

मारा जायेगा प्रधानमंत्री 158

मृत्यु पर परिवार 162

उम्मीद 163

तनाव 164

आतंक-II 165

कोई तो कारण था 167

पहाड़ 168

कहाँ मिला 169

दीया 172

सरहदों पर 173

तम्बू 174

पूछो तो सही 176

पहाड़-1 177

पहाड़-2 179

पहाड़-3 181

पहाड़-4 182

देख लेना तुम 183

माँ, तुमने कहा था 186

आहट 189

दर्शक सुखी थे 191

थोड़ा-सा कुछ 192

लिखना तो तुम्हें था 194

मुग़ल गार्डन-1 196

मुग़ल गार्डन-2 198

मुग़ल गार्डन-3 200

प्रकाश- स्तम्भों के नीचे

ऐड़ लगाए दौड़ रहा समय

क्या सिर्फ इसीलिए

गलत हो जाएंगी

पीछे छूट चुकी रोशनियाँ

ठहरा था जहाँ

पल भर को काल

कीच उकेलते हाथों में भरा गया जल

एकाएक पारदर्शी हो गया था

क्या तुम्हें याद नहीं

उन्हीं प्रकाश- स्तम्भों के नीचे बैठकर

लिखी गई थीं गाथाएँ

पलों के पराक्रम की

जो सदियों के सिरहाने खड़े

पहरुओं को

अभी तक याद है